राजनीति विज्ञान

बी.ए.1 ईयर के छात्रों के लिए
प्रथम प्रश्न पत्र : राजनीति सिद्धांत

"राजनीति विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं विषय क्षेत्र"

चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रस्तुतकर्ता –
डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उधेशयों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देशय के लिए इसका उपयोग पूर्णत: प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करंगे और इसका व्यतिगत ज्ञान कि उन्नति के लिए ही प्रयोग करेंगे। इस ए-कंटेन्ट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

राजनीति शास्त्र का अर्थ

राजनीति विज्ञान शब्द समूह अंग्रेजी भाषा के **Political Science** शब्द समूह का हिन्दी रूपान्तरण है, जो **Politics** (पॉलिटिक्स) शब्द से बना है। **Politics** शब्द की ब्युत्पत्ति यूनानी भाषा के **Polis** शब्द से हु है, जिसका उस भाषा में अर्थ है- नगर राज्य, नगर-राज्यों की स्थिति, कार्य प्रणाली एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित विषयों का अध्ययन करने वाले विषय को ग्रीस निवासी 'पॉलिटिक्स' कहते थे। वर्तमान में राजनीति विज्ञान मनुष्य के उन कार्य-कलापों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जिनका संबंध उसके जीवन के राजनीतिक पहलू से होता है गार्नर के अनुसार- "राजनीति विज्ञान की उतनी ही परिभाषाएं हैं जितने कि राजनीति के लेखक है। फिर भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से राजनीति विज्ञान का विभिन्न परिभाषाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

परम्परागत दृष्टिकोण-

परिभाषाएं

इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. राजनीति विज्ञान केवल 'राज्य के अध्ययन है।' डॉ गार्नर के अनुसार- "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का आरंभ और अंत राज्य के साथ होता है।"

1.राजनीति विज्ञान केवल 'सरकार का अध्ययन है।' लीकॉक के अनुसार- "राजनीति विज्ञान सरकार से संबंधित है। उस सरकार से जिसका आधार व्यापक अर्थ में प्राधिकार का मूलभूत विचार है।"

2.राजनीति विज्ञान 'राज्य और सरकार' 'दोनों का अध्ययन' गिलक्राइस्ट के अनुसार - "राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार की सामान्य समस्याओं का अध्ययन करता है।"

व्यवहारवादी दृष्टिकोण-

परिभाषाएं

1.लासवेल के अनुसार- ''राजनीति विज्ञान का अभीष्ट वह राजनीति है जो यह बताये कि कौन क्या कब और कैसे प्राप्त करता है।"

2.रॉबर्ट ए. डहल कहते हैं- ''किसी भी राजनीति व्यवस्था में शक्ति, शासन अथवा सत्ता का बड़ा महत्व है।"

राजनीति विज्ञान मनुष्य के उन कार्यकलापों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जिनका सम्बन्ध उसके जीवन के राजनीतिक पहलू से होता है तथा उस अध्ययन में वह मनुष्य के जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक आदि सब पहलुओं के पारस्परिक प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह देखता है कि मनुष्य के जीवन को राजनीतिक पहलू उसके अन्य पहलूओं का और अन्य पहलू उसके राजनीतिक पहलू का परस्पर किस रूप में प्रभावित करते है।

राजनीति विज्ञान की प्रकृति

क्या राजनीति विज्ञान 'विज्ञान' है ?

राजनीति विज्ञान को विज्ञान मानने के सम्बन्ध में विद्वानों में बहुत अधिक मतभेद हैं। एक ओर बकिल, कॉर्स्टे, मेटलैण्ड एमास, बियर्ड कैटलिन, मोस्का, ब्रोगन, बर्क आदि विद्वान् हैं,जो राजनीति विज्ञान को विज्ञान नहीं मानते,तो दूसरी ओर अरस्तू इसे 'सर्वोच्च विज्ञान' (Master Science) और बर्नार्ड शॉ इसे 'मानवीय सभ्यता को सुरक्षित रख सकने वाला विज्ञान' कहते हैं। अरस्तू के अतिरिक्त बोदाँ, हॉब्स, मॉण्टेस्क्यू, ब्राइस, ब्लण्टशली, जैलीनेक, फाइनर, लास्की आदि विद्वान् भी इसे विज्ञान के रूप में स्वीकार करते हैं।

राजनीति विज्ञान की वैज्ञानिकता के विपक्ष में तर्क

बकिल, कॉम्टे आदि विद्वानों के अनुसार विज्ञान ज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत कार्य और कारण में सदैव निश्चित सम्बन्ध पाया जाता है और जिसके निष्कर्ष निश्चित एवं शाश्वत होते हैं। विज्ञान की इस परिभाषा के आधार पर ये विद्वान् राजनीति विज्ञान को विज्ञान के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। - राजनीति विज्ञान को विज्ञान न मानते हुए जो तर्क दिए जाते हैं,उनका वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है

(1) सर्वमान्य नियमों का अभाव - राजनीति विज्ञान की वैज्ञानिकता पर सन्देह प्रकट करते हुए तर्क दिया जाता है कि राजनीतिविज्ञान में ऐसे नियमों का अभाव है जिन्हें सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त हो । राजनीति विज्ञान में गणित के दो और दो चार या भौतिक विज्ञान के 'गुरुत्वाकर्षण के नियम' की भाँति ऐसे नियमों का नितान्त अभाव है जिन पर सभी विद्वान् सहमत हों।

(3) प्रयोग व परीक्षण सम्भव नहीं - भौतिक विज्ञानों के तथ्यों को परीक्षण की कसौटी पर कसा जा सकता है। किन्तु राजनीतिविज्ञान में ऐसे परीक्षण सम्भव नहीं हैं । अतः यह विज्ञान नहीं है । इस सम्बन्धमें ब्राइस ने कहा है कि “भौतिक विज्ञान में एक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बार-बार प्रयोग किया जा सकता है,लेकिन राजनीति में एक प्रयोग बार-बार नहीं दोहराया जा सकता है, क्योंकि उसी प्रकार की दशाएँ दुबारा नहीं पैदा की जा सकतीं,जैसे कोई नदी के एक ही प्रवाह में दुबारा प्रवेश नहीं कर सकता।"

(4) भविष्यवाणी का अभाव - पदार्थ विज्ञान के नियम निश्चित होने के कारण किसी भी विषय के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है । उदाहरण के लिए, यह सही-सही बताया जा सकता है कि किस दिन और किस समय चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण लगेगा। किन्तु भौतिक विज्ञान की भाँति राजनीति विज्ञान में भविष्यवाणी सम्भव नहीं है। यह कहना कि चुनाव में कौन-सा उम्मीदवार विजयी होगा,कठिन है। बर्क ने तो यहाँ तक कह दिया है कि “राजनीति में भविष्यवाणी करना मूर्खता के सिवाय कुछ नहीं है।”

(5) निश्चितता का अभाव - राजनीतिविज्ञान के तथ्य इतने अटल, स्पष्ट तथा निश्चित नहीं होते जितने अन्य विज्ञानों के निष्कर्ष होते हैं। डॉ. अप्पादोराय का मत है कि राजनीति विज्ञान के आधार अनिश्चित होते हैं और निष्कर्ष सन्देहात्मक।

(6) मानव स्वभाव की परिवर्तनशीलता - अन्य विज्ञानों का सम्बन्ध निर्जीव पदार्थों से है, जबकि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध चेतनशील मनुष्य से है। राजनीति विज्ञान का पात्र स्वयं मनुष्य है,जो सोच सकता है तथा गतिशील है। किसी निर्जीव वस्तु के लिए दो या दो से अधिक विद्वानों की राय एक हो सकती है, परन्तुमनुष्य के लिए एक राय सम्भव नहीं है। अलग-अलग व्यक्तियों के स्वभाव में अन्तर होताहै। एक समान परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्ति भी भिन्न-भिन्न रूप से आचरण करते हैं।उपर्युक्त तर्कों के आधार पर बकिल कहते हैं कि "ज्ञान की वर्तमान अवस्था में राजनीति कोविज्ञान मानना तो बहुत दूर रहा, यह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी हुई कला है।" इसी बात को मेटलैण्ड ने उपहासमयी भाषा में इस प्रकार कहा है, "जब मैं राजनीति विज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत परीक्षा प्रश्नों को देखता हूँ तो मुझे प्रश्नों के प्रति नहीं,वरन् शीर्षक के प्रति खेद होता है।" बर्क व्यंग्यमयी भाषा में कहते हैं कि "जिस प्रकार हम सौन्दर्य विज्ञान को विज्ञान की संज्ञा नहीं दे सकते, उसी प्रकार राजनीति विज्ञान को भी विज्ञान नहीं कहा जा सकता है।" इसी प्रकार विलोबी ने भी कहा है, "राजनीति का विज्ञान बनना न तो सम्भव है और न ही वांछनीय।"

राजनीति विज्ञान की वैज्ञानिकता के पक्ष में तर्क

उपर्युक्त विचारों में सत्यता का कुछ अंश अवश्य है, किन्तु बकिल, कॉम्टे आदि विद्वानों का दृष्टिकोण विज्ञान की संकुचित एवं त्रुटिपूर्ण धारणा पर आधारित है। गार्नर के शब्दों में "एक विज्ञान किसी विषय से सम्बन्धित उस ज्ञान राशि को कहते हैं जो विधिवत् पर्यवेक्षण, अनुभव एवं अध्ययन के आधार पर प्राप्त की गई हो और जिसके तथ्य परस्पर सम्बद्ध, क्रमबद्ध तथा वर्गीकृत किए गए हों।" राजनीति विज्ञान को यदि विज्ञान की इस परिभाषा के सन्दर्भ में देखा जाए, तो इसे भी विज्ञान कहा जा सकता है । राजनीति विज्ञान के विज्ञान होने के पक्ष में निम्न तर्क दिए जा सकते हैं

(1) क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित - विज्ञान का सर्वप्रमुख लक्षण यह है कि उसका समस्त ज्ञान क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित होना चाहिए। राजनीति विज्ञान राज्य, सरकार, राजनीतिक संस्थाओं, धारणाओं व विचारों का क्रमबद्ध ज्ञान प्रस्तुत करता है। अतः इस आधार पर राजनीति विज्ञान एक विज्ञान है।

(2) सुनिश्चितता - राजनीति विज्ञान में भी प्राकृतिक तथा भौतिक विज्ञानों की भाँति कुछ सामान्य नियम एवं शाश्वत सिद्धान्त हैं । राज्य,विधि,न्याय,शिक्षा,कानून, क्रान्ति आदि के सम्बन्ध में कुछ ऐसे नियम व सिद्धान्त हैं जो प्रत्येक परिस्थिति तथा देश में लागू होते हैं। निःसन्देह राजनीति विज्ञान के निष्कर्ष इतने शुद्ध तथा अटल नहीं होते जितने कि अन्य प्राकृतिक विज्ञानों के होते हैं। वैसे तो अनेक बार प्राकृतिक विज्ञानों के निष्कर्ष भी गलत होते हैं। मौसम के सम्बन्ध में की जाने वाली अनेक भविष्यवाणियाँ गलत होती हैं। लॉर्ड ब्राइस ने उचित ही कहा है कि "यदि ऋत विज्ञान, विज्ञान है, तो राजनीति विज्ञान भी विज्ञान हो सकता है।"

(3) परीक्षण सम्भव - यदि परीक्षण से अभिप्राय किसी भी क्रमबद्ध प्रयोग से है, तो राजनीति विज्ञान में परीक्षण का अभाव नहीं है । यद्यपि राजनीति विज्ञान में पदार्थ विज्ञानों की भाँति प्रयोगशाला में बैठकर पूर्ण निश्चितता एवं सरलता से तो प्रयोग नहीं किए जा सकते,फिर भी राजनीति विज्ञान में प्रयोग होते रहते हैं और एक प्रकार से सम्पूर्ण मानव जगत्इ सकी प्रयोगशाला है । इस सम्बन्ध में गार्नर ने ठीक ही लिखा है कि "प्रत्येक नये कानून का निर्माण,प्रत्येक नई संस्था की स्थापना और प्रत्येक नई बात का प्रारम्भ एक प्रयोग ही होता है, क्योंकि उस समय तक वह अस्थायी या प्रस्ताव रूप में ही समझा जाता है जब तक कि परिणाम उसके स्थायी होने की योग्यता सिद्ध न कर दें।"

(4) कार्य और कारण में सम्बन्ध - इसमें कोई सन्देह नहीं कि पदार्थ विज्ञानों की भाँति राजनीति विज्ञान में कार्य तथा कारण में प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं किया जा सकता, फिर भी विशेष घटनाओं के अध्ययन से कुछ सामान्य परिणाम तो निकाले ही जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, फ्रांस, रूस तथा चीन में हुई क्रान्ति के अलग-अलग कारण बताए जाते हैं, परन्तु यदि ध्यान से देखा जाए तो इन तीनों ही देशों में क्रान्ति के मुख्य कारण एक जैसे ही थे। तीनों देशों में अत्याचार अपनी चरम सीमा पर था, लोगों को उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

(5) भविष्यवाणी की क्षमता - राजनीति विज्ञान में प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति तो भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है,परन्तु इतना मानना होगा कि इस विषय में भी भविष्यवाणी सम्भव है। फाइनर के शब्दों में, हम निश्चिततापूर्वक भविष्यवाणियाँ नहीं कर सकते, लेकिन सम्भावनाएँ तो व्यक्त कर ही सकते हैं।" वस्तुतः राजनीति विज्ञान की वैज्ञानिकता के सम्बन्ध में बकिल, कॉम्टे और मेटलैण्ड द्वारा उठाई गई आपत्तियाँ बहुत अधिक सीमा तक निराधार हैं । **अरस्तू, मॉण्टेस्क्यू, बोदाँ, हॉब्स, सिजविक, ब्राइस, ब्लण्टशली, बर्गेस, विलोबी, जैलीनेक, गार्नर** आदि ऐसे विद्वान् हैं जिन्होंने राजनीति विज्ञान को विज्ञान माना है। **सर फ्रेड्रिक पोलक** का भी विश्वास है कि "जिस प्रकार नैतिकता का विज्ञान है, उसी भाव में और उसी तरह अथवा लगभग उसी सीमा तक राजनीति भी विज्ञान है।"

राजनीतिविज्ञान 'कला' के रूप में

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार कला प्रकृति से भिन्न एक मानवीय कुश राता है,किसी कार्य के निष्पादन में कल्पनात्मक कुशलता का प्रयोग है । कला कल्पनात्मक है, विज्ञान की भाँति सुनिश्चित व नियमबद्ध नहीं है। कला का आधार व्यक्तिगत विवेक,विभिन्नता,अनुभव व कुशलता है । इस आधार पर राजनीति विज्ञान न केवल विज्ञान है, अपितु इसे कला भी कहा जा सकता है।

राजनीति विज्ञान को कला मानने के पक्ष में तर्क

(1) राजनीति विज्ञान कला है, क्योंकि राजनीति विज्ञान में राज्य के भूतकालीन और वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करने के साथ-साथ राज्य के भावी आदर्शात्मक स्वरूप का अध्ययन भी किया जाता है और यह बतलाया जाता है कि भविष्य में राज्य और राजनीतिक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए।

(2) राजनीति विज्ञान उसी रूप में कला है जिस रूप में एक राजनीतिज्ञ कलाकार होता है। शासन संचालन एक कला है। राजनीति विज्ञान के विद्वान् राजनीति से सम्बन्धित नियमों का निर्धारण करते हैं और एक राजनीतिज्ञ उन नियमों को व्यावहारिक रूप देकर अपनी कला का प्रदर्शन करता है।

(3) राजनीति विज्ञान रूपी कला का एक रूप और भी है। कला जीवन का चित्रण है। राजनीति विज्ञान राजनीतिक जीवन का चित्रण करता है । राजनीति विज्ञान मानव को सर्वोत्तम नागरिक जीवन का उपयोग करने के योग्य बनाता है।

(4) ब्लण्टशली भी राजनीति विज्ञान को कला के रूप में देखते हुए कहते हैं—"राजनीतिशास्त्र से विज्ञान की अपेक्षा कला का अधिक बोध होता है। इसका सम्बन्ध राज्य के व्यावहारिक संचालन अथवा निर्देशन से है।" इस प्रकार राजनीति विज्ञान, विज्ञान और कला, दोनों ही है। अपने व्यापक अर्थ में तथा सामाजिक विज्ञान के एक अंग के रूप में हम इसे विज्ञान की संज्ञा प्रदान कर सकते हैं तथा आदर्श जीवन की प्राप्ति में सहयोग करने के कारण इसे कला भी मान सकते हैं। कैटलिन ने राजनीति विज्ञान का अर्थ विस्तार करते हुए उसे कला, दर्शन और विज्ञान तीनों माना है। लासवेल ने भी इसे 'कला, विज्ञान और दर्शन का संगम' कहा है।

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र

राजनीति विज्ञान के क्षेत्र का पर्याय इसकी विषय-वस्तु है, परन्तु राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के विषय-वस्तु पर राजनीतिक वैज्ञानिक एकमत नहीं है इसलिए यूनेस्को सम्मेलन 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के तत्वाधान में सम्पूर्ण विश्व के राजनीतिक विज्ञान के विद्वानों का एक सम्मेलन हुआ जिसमे राजनीतिक विज्ञान के विषय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली विषय वस्तु पर सर्वसम्मत निर्णय लिया गया।

1. राजनीति के सिद्धांत – राजनीतिक सिद्धांत तथा राजनीतिक विचरों का इतिहास।
2. राजनीतिक संस्थाएं – संविधान, राष्ट्रीय सरकार, प्रादेशिक तथा स्थानिये शासन और तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं।
3. राजनीतिक दल, समूह एवं लोकमत – राजनीतिक दल, समूह, समुदाय, नागरिकों का सरकार व प्रशासन में भाग लेना और लोकमत।
4. अंतर्राष्ट्रीय संबंध – अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय विधि, अंतर्राष्ट्रीय संगठन और प्रशासन।

राज्य का अध्ययन

राजनीति विज्ञान के अध्ययन का प्रमुख तत्व राज्य है, क्योंकि डॉ. गार्नर ने तो यहाँ तक लिखा है, ''राजनीति विज्ञान के अध्ययन का आरंभ और अंत राज्य के साथ होता है।'' प्रो. लास्की ने कहा है- "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का संबंध संगठित राज्यों से संबंधित मानव-जीवन से है।" गिलक्राइस्ट ने लिखा है- "राज्य क्या है? राज्य क्या रहा है? और राज्य क्या होना चाहिए?'' राजनीति विज्ञान यह बताता है। अत: स्पष्ट है कि राजनीति विज्ञान में राज्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों का ही अध्ययन किया जाता है, जिसका विवेचन निम्नवत् है-

1.राज्य का अतीत या ऐतिहासिक स्वरूप- राज्य के सही अध्ययन के लिए राज्य के अतीत या उसके ऐतिहासिक स्वरूप को जानना आवश्यक है, क्योंकि अतीत में राज्य को 'नगर-राज्य' कहा जाता था और राज्य में श्वर का अंश मानते हुए उसे श्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। राजा की आज्ञा सर्वेपरि कानून थी। इस प्रकार राज्य के पास असीमित शक्तियाँ थीं, परन्तु धीरे-धीरे नगर राज्यों के आकार में वृद्धि होती गयी और राज्य संबंधी विचारधाराओं में भी परिवर्तन होता रहा। राज्य के अतीत के अध्ययन में राज्य की उत्पत्ति, उसके संगठन, उसके आधारभूत तत्वों, यूनानी शासन-व्यवस्था, प्रजातान्त्रिक विचारों का विकास, राजनीतिक क्रान्तियाँ, उनके कारण और परिणाम, राज्य के सिद्धांत, उद्देश्य एवं प्रभुसत्ता का ऐतिहासिक स्वरूप आदि सम्मिलित हैं और ये तत्व ही राजनीति विज्ञान के अध्ययन की विषय वस्तु है जिनका परिणाम राज्य का वर्तमान स्वरूप है।

1. राज्य का वर्तमान स्वरूप- राज्य का वर्तमान स्वरूप, उसके अतीत के क्रमिक विकास का ही परिणाम है, जो कि प्राचीन 'नगर-राज्यों' की सीमाओं में वृद्धि हो जाने के कारण ही संभव हो सका। उन्होंने 'राष्ट्रीय राज्यों' का रूप धारण कर लिया है और इससे भी अधिक अब तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के आधार पर सम्पूर्ण विश्व के लिए ही एक राज्य अर्थात् 'विश्व राज्य' की कल्पना की जाने लगी है। इसीलिए विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ एवं अन्त्तराष्ट्रीय सन्धि एवं समझौते भी राजनीति विज्ञान के अध्ययन की विषय वस्तु बन गये हैं। आधुनिक युग में राज्य को एक लोक-कल्याणकारी संस्था माना जाता है। अत: आज मानव-जीवन का को भी ऐसा पक्ष नहीं है, जो किसी न किसी रूप में राज्य के संपर्क में न आता हो। इसीलिए मानव व सामाजिक जीवन को सुखी बनाने और उसके सर्वांगीण विकास हेतु राज्य द्वारा किये गये कार्यों का अध्ययन व राजनीति विज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में सम्मिलित है।

2. राज्य की भविष्य या भावी स्वरूप- राज्य के अतीत के आधार पर वर्तमान के आधार पर राज्य के भावी आदर्श एवं कल्याणकारी स्वरूप की कल्पना की जाती है। इस प्रकार वर्तमान सदैव ही सुधारों का काल बना रहता है। अतीत एवं वर्तमान की त्रुटियों एवं असफलताओं के दुष्परिणामों के अनुभवों से भविष्य का पथ प्रशस्त होता है। इन अनुभवों के आधार पर ही राज्य के भावी आदर्श स्वरूप के निर्धारण में इस प्रकार की व्यवस्थाएँ करने का प्रयास किया जाता है कि अतीत औ वर्तमान की समस्त उपलब्धियाँ तो राज्य के आधार के रूप में बनी रहें, परन्तु त्रुटियों एवं असफलताओं की पुनरावृत्ति न हो। राज्य के अतीत और वर्तमान स्वरूप के अध्ययन के आधार पर ही विभिन्न राजनीतिक विचारकों द्वारा एक आदर्श राज्य के स्वरूप की भिन्न-भिन्न रूपरेखाएँ प्रस्तुत की ग हैं। इस प्रकार राजनीति विज्ञान राज्य के एक श्रेष्ठ, सुखद, कल्याणकारी एवं आदर्श स्वरूप की कल्पना करता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि राजनीति विज्ञान का अध्ययन, राज्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों ही कालों से घनिष्ठ रूप में संबंधित है।

सरकार का अध्ययन

राज्य के अध्ययन के साथ ही साथ राजनीति विज्ञान में राज्य के अभिन्न अंग सरकार क भी अध्ययन किया जाता है। प्राचीन काल में जहां निरंकुश राजतन्त्र थे, वहाँ आज लोकतान्त्रिक सरकारें हैं। इस समय राजा की आज्ञा ही सर्वोपरि कानून थी, परन्तु आज सरकार के तीनों अंगों (व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका) में शक्ति-पृथक्करण का सिद्धांत क्रियाशील है और राजा की आज्ञा कानून न होकर लोकतांत्रिक सरकारों की वास्तविक शक्ति जनता में निहित है।

मनुष्य का अध्ययन

मनुष्य, राज्य की इका है। मनुष्यों के बिना राज्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती, अत: मनुष्य राजनीति विज्ञान के अध्ययन का प्रमुख तत्व है। मनुष्य का सर्वागीण विकास एवं कल्याण करना ही राज्य का प्रमुख कर्तव्य हैं परन्तु जहाँ नागरिकों के प्रति राज्य के कर्तव्य होते है वहा राज्य के प्रति नागरिकों के भी कर्तव्य होते हैं। आर्दश नागरिक ही राज्य को आदर्श स्वरूप प्रदान कर सकते हैं और उसकी प्रगति में योगदान कर सकते हैं।

संघों एवं संस्थाओं का अध्ययन

प्रत्येक राज्य में अनेक समाजोपयोगी संस्थाएं होती है, जो नागरिकों के उत्थान एवं विकास के लिए कार्य करती हैं। इन संस्थाओं में राज्य एक सर्वोच्च संस्था होती है और अन्य सभी संस्थाएँ राज्य द्वारा ही नियन्त्रित होती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं संबंधों का अध्ययन

आधुनिक युग में को भी राष्ट्र पूर्णत: स्वावलम्बी नहीं है। विश्व के समस्त राष्ट्र किसी न किसी न रूप में एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इस पारस्परिक निर्भरता के कारण ही आज एक राष्ट्र की घटना से अन्य राष्ट्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। इस प्रकार विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता ने उन्हें एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप में संबंध कर दिया है। यातायात एवं संचार-साधनों के माध्यम से आज समस्त राष्ट्र एक दूसरे के बहुत ही निकट आ गये हैं और उनमें परस्पर विभिन्न प्रकार के संबंध स्थापित हो गये हैं। अतएव विश्व के समस्त राष्ट्रों के पारस्परिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, राजनयिक एवं अन्य विभिन्न प्रकार के अंतराष्ट्रीय संबंध, राजनीति विज्ञान के अध्ययन के प्रमुख विषय बन गये हैं।

वर्तमान राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन

वर्तमान राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन राजनीति विज्ञान का प्रमुख विषय है। प्रत्येक राष्ट्र में, चाहे वहाँ शासन प्रणाली किसी भी प्रकार की क्यों न हो, स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर की अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती ही रहती हैं। उदाहरणार्थ, भारत इस समय सम्प्रदायवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, एवं भाषावाद जैसी अनेक समस्याओं से ग्रसित है। इसी प्रकार विश्व के अन्य देश भी अपनी-अपनी समस्याओं से जूझ रहे हैं। इस प्रकार, विभिन्न राष्ट्रों की स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की समस्त राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन राजनीति विज्ञान के अध्ययन में सम्मिलित है।

निष्कर्ष

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अब राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में समुदाय, समाज, श्रमिक, संगठन, राजनीतिक दल, दबाव समूह और हित समूह आदि का अध्ययन भी सम्मिलित है, इसके साथ ही साथ आधुनिक व्यवहारवादी दृष्टिकोण की नूतन प्रवृत्तियों ने स्वतंत्रता, समानता और लोकमत जैसी नवीन अवधारणाओं तथा मानव-जीवन के अराजनीतिक पक्षों को भी उसकी विषय वस्तु में सम्मिलित करके राजनीति विज्ञान के क्षेत्र को अत्यधिक व्यापक बना दिया है।

वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रॉबर्ट ए. डहल ने लिखा है, ''राजनीति आज मानवीय अस्तित्व का एक अपरिहार्य तत्व बन चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में किसी न किसी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था से संबंद्ध होता है।''

संदर्भ / ग्रंथ

1. https://www.scotbuzz.org/2017/05/rajaneeti-vigyan-ka-arth-evam-paribhasha.html

2.https://www.mjprustudypoint.com/2019/10/1-ba-i-political-science-i.html

3. पुखराज जैन, डॉ. एन. डी. अरोरा एवं डॉ. आर. के. आनंद - SBPD Publishing House, Agra – राजनीतिक विज्ञान - बी ए प्रथम वर्ष।